द्वारा लखिति वर्गीज़ मैथ्□ यू
शुक्रवार, 25 सतिम्बर 2009 12:50 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 29 अक्टूबर 2009 15:22

□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□

मै पछिले अनेकवर्षों से परमेश्□ वर केवचन केखलिाफबहुत सी सामाजकिबुराइयों से ग्रसति घृणति पापमय जीवन व्□ यतीत कर रहा था, हालांकमिै जन्□ म से ईसाई था चूंकबिचपन में मुझे माता-पता केद्वारा कैथोलकिसमुदाय में बपतस्□ मा दलिाया गया था परन्□ तु हम लोगों का मसीही जीवन केवल दखिावे भर का था□ सन् 1988 में मैंने रायपुर में हुई मसीही सभाओं में चार दनि लगातार भाग लयि□ वहां पवत्रि शास्□ त्र केजो वचन मैंने सुने, तो मुझे ऐसा लगा कजितिने भी वचन कहे गये, वे सब मानो मेरे लि□ ही थे□ मुझे उन दनिों अनुभव हुआ कमैं कतिना पापमय जीवन बति रहा हूं, तब मैंने अपने कयि हु□ पापों की क्षमा केलि□ परमेश्□ वर से रो-रो कर प्रार्थना□ की□ परणिामस्□ वरूप परमेश्□ वर ने मेरा रोना और गड़िगड़िाना ग्रहण कयि और मैं धीरे-धीरे हर □ कपापों से दूर रहने की कोशशि करने लगा क्□ योंकउन दनिों जब मैंने बाइबलि पढ़ना प्रारम्□ भ कयि तब मुझे यह ज्ञात हुआ कमैं जसि व्□ यवसाय से जुड़ा हूं उसमें भी काफी बुराइयां है□ झूठ बोलना, चोरी करना, धोखा देना इत्□ यादि तमाम बातें इस व्□ यवसाय में शामलि थीं□ जब मुझे ज्ञात हुआ कयि सब बातें परमेश्□ वर केवचन केखलिाफहै तो मैंने धीरे-धीरे समयानुसार इन बुराइयों से दूर रहने की कोशशि की और अपने व्□ यवसाय को बन्□ द कर दयि□ जब मैंने अपना व्□ यवसाय बन्□ द कयि उसकेबाद शैतान द्वारा मेरी बहुत सी परीक्षा□ ली गई, यहां तककऐसा वक्□ त आ गया कजीवनयापन केलि□ मुझे अनेकों कठनिाइयों का सामना करना पड़ा परन्□ तु मैंने अपने प्रभ में अटल वशि□ वास रखा क्□ योंकमैंने जान लयि था कि परमेश्□ वर ने मुझ जैसे पापयिों को बचाने केलि□ ही अपने □ कलौते पुत्र प्रभु यीशु मसीह को इस संसार में भेजा□

सन् 1991 में मै अपने पतिाजी को शारीरकितौर पर चंगाई दलिाने केलि□ अपनी माता केसाथ लेकर केरल के□ कप्रसद्धि चर्च जा रहा था क्□ योंकमिेरे पतिाजी कैंसर रोग से ग्रस्□ त थे□ जब हमे रेलगाड़ी से यात्रा कर रह थे तब अचानकरात केदो बजे मेरे पतिा को बहुत तक्लीफशुरू हो गई, वे हाथ पैर पटकने लगे और देखते ही देखते उनकी श्□ वसन गतभिी बन्□ द हो गई□ उस समय गाड़ी में ना कोई डॉक्□ टर था और ना कोई अन्□ य सुवधिा थी□ मुझे □ कही मार्ग मालूम पड़ा कमैं केवल परमेश्□ वर से अपने पतिा केलि□ प्रार्थना करूं□ मैंने आधा घंटा लगातार रो-रो कर प्रार्थना की, प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुनी और आधे घंटे बाद पतिा जी ऐसे उठकर बैठ गये जैसे कोई गहरी नींद से सो कर उठता है□ मैंने आंसुओं से भरे हृदय केसाथ प्रभु का धन्□ यवाद कयि और उसकी स्□ तुति की और हम सकुशाल चर्च पहुंच गये□

इस घटना केबाद परमेश्□ वर पर मेरा वशि□ वास और अधकिबढ़ गया ओर मैं नरिन्□ तर प्रार्थना करता रहता था कहे प्रभु, मुझे हर प्रकार केपापों से छुटकारा दे, मुझे वशि□ वास में दृढ़ बना, अपना अनुग्रह मुझे प्रदान कर□ अन्□ तत□ परमेश्□ वर ने मेरी प्रार्थना सुनी, जसि चर्च में मैं अपने पतिा को लेकर गया था उसमें हो रही सभाओं केपांचवे दनि जब लगभग करीब साढ़े तीन हज़ार लोग प्रार्थना में लगे हु□ थे, मेरे दलि में ऐसे ज़ज्□ बात उमड़ने लगे, मुझसे जैसे कोई कहने लगा कतू अपने आप को परमेश्□ वर केसामने अर्पण कर दे□ उसी समय मैंने □ कनर्णिय लयि और खुद को, अपने परवािर को व अन्□ य वस्□ तुओं को सच्□ चे हृदय केसाथ प्रभु को अर्पति कर दयि□ प्रार्थना सभाओं केअन्तमि दनि काउन्□ सलगि केसमय पवत्रि आत्□ मा का दान पाई हुई □ कबहन मेरे पास आई और मुझसे बोली "मैं काउन्□ सलगि केलि□ आई हूं आप क्□ या इसकेलि□ तैयार है?" मेरा उत्□ तर हां में था□ मैंने अपने घुटने टेकेऔर हाथ जोड़कर प्रार्थना में परमेश्□ वर का ध्□ यान करने लगा□ तब उस बहन ने मेरे सरि पर हाथ रखा और मेरे लि□ मौन प्रार्थना की, उसकेबाद वह बोली कपरमेश्□ वर तुम्□ हें अपनी सेवा केलि□ बुला रहा है□ उसकेबाद परमेश्□ वर पर मेरा वशि□ वास और भी अधकिहो गया परन्□ तु मैं परमेश्□ वर की सेवा कसि प्रकार करूं, इसका मुझे कोई रास्□ ता दखिाई नहीं दे रहा था□

जनवरी 1992 में क्रशि्चयिन चर्च, रायपुर में कार्यरत पास्□ टर नसीम डेवडि मेरे घर आये□ प्रभु केबारे में मुझसे बातें की तब मैंने अपनी समस्□ त समस्□ याओं को उनकेसामने प्रस्□ तुत कयि□ उन्□ होंने मुझे आश्□ वासन दयि और कहा कआप अपने परवािर सहति चर्च में रवविार को आया करो□ मैंने उनका अनुसरण कयि□ मैं चर्च जाने लगा वहां की सभी गतविधियिों में मैं भाग लेता था और समस्□ त वधियिों को पूर्ण करता था□ उसकेबाद पास्□ टर □ स.डी. सागर, डॉ. अजय लाल, भाई रे मर्फी, डॉ. जे.के. हेनरी केमार्ग नर्देिशन में, उनकेबताने पर कमैं कसि तरह प्रभु की सेवा कर सक्ता हूं मैं बैतलेहम बाइबलि कॉलेज में आ गया, जहां मैंने तीन वर्ष बाइबलि अध्□ ययन कयि□ उसकेपश्□ चात् प्रभु की सेवकाई में दल्□ ली राजहरा क्षेत्र में क्लीसयिा क्षेत्र में क्लीसयिा स्□ थापति करने का कार्य प्रारम्□ भ कयि□ परमेश्□ वर केअनुग्रह से मैं बहुत सी आत्□ माओं को प्रभु केपास लाया और आज मैं इस क्लीसयिा केवस्□ तार और सुसमाचार प्रचार में संलग्□ न हूं□

"जो मुझे सामर्थ देता है उसमें है सब कुछ कर सक्ता हूं" (फलिप्पियों 4:13)□

□□□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□ (□.□□□.)